स्वीकृत ~~[illegible]~~

प्राचीन संस्कृति :–

यज्ञ की वैज्ञानिकता

डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल

यज्ञ का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों का कल्याणार्थ है। यही एक ऐसी परम्परा भारतवर्ष में विद्यमान है जो अनेक संस्कृतियों के उत्थान पतन के बाद आज भी दृष्टिगोचर है।

यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि अभिमंत्रित जड़ी–बूटियों को यज्ञ के द्वारा वायु में मिलाकर यज्ञ के आसपास उपस्थित व्यक्तियों पर व्यापक प्रभावशाली सिद्ध होती है, क्योंकि ठोस से अधिक प्रभावशाली द्रव पदार्थ तथा द्रव पदार्थ से अधिक प्रभावशाली वाष्प होती है। वाष्पीकृत नस्य पदार्थ ठोस और तरल औषधि के अपेक्षा अति शीघ्र प्रभाव दिखाती है। यज्ञ का विज्ञान भी ऐसे ही उससे शीघ्र प्रभाव दिखाता है। श्वास के सहारे रोग निवारक एवं प्राणदाता औषधियों को शरीर के रोम–रोम में पहुँचाने का कार्य अग्निहोत्र (यज्ञ) द्वारा शीघ्र एवं कुशलता से हो जाता है। वनौषधियों की वाष्पीकृत स्थिति से फेफड़ों से होती हुई मस्तिक तक पहुँच शरीर में प्रभाव दिखाना शुरू कर देती है। एक मिनट में हृदय 70–80 बार धड़कन करके लगभग 7500 मि.ली. वायु का अन्दर ले जाकर, कार्बन डाई आक्साइड बाहर फेंकता है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है वाष्पीकृत धूम सम्पूर्ण शरीर के रक्त में कितनी जल्दी प्रवेश कराया जा सकती है। अध्यात्मिक लाभ के अलावा व्यक्ति पर मानसिक प्रभाव तुरन्त पड़ने लगता है।

इस प्रकार शरीर बहुत से तत्वों को ग्रहण करने लगता है तथा विजातीय पदार्थों को शरीर से पसीने द्वारा बाहर निकाल देता है। वायु परिवर्तन के साथ यज्ञ में कई प्रकार की रंगीन किरणें भी निकलती है जितने रंग हम दिखाई देते हैं उनमें प्रधान तीन रंग हैं (1) पीला (2) लाल (3) नीला। यज्ञ करने वालों को सबसे श्रेष्ठ पीली किरणें हैं। रंगों नाइट्रोजन, कार्बन, आक्सीजन, बेरियम, कैल्शियम, स्ट्रोशियम, केडमियम, कोबाल्ट, मेगनिज, टिटेनियम, एल्यूमिनियम, क्रोमियम, लोहा, निकिल, तांबा और जस्ता पाया जाता है। जिन्हें ऑखों द्वारा ग्रहण करके शरीर को कई प्रकार से विद्युत किरणें मिलती है। शरीर से पहुँचकर सुषुम्ना नाड़ी पर प्रभाव दिखाती है। वहॉ से शरीर में स्थित षड् चक्रों में पहुँचकर मानसिक उत्तेजनाओं को शान्ति पहुँचाती है। इसमें कई प्रकार की निगेटिव, पोजेटिव, एवं न्यूट्रल विद्युत ऊर्जा भी प्राप्त होती है। इस प्रकार यज्ञ के माध्यम से एक साथ समूह या सम्पूर्ण वातावरण की चिकित्सा हो जाती है । इस प्रकार से यज्ञ अकार्बनिक यौगिकों को कार्बनिक ठोस यौगिकों में बदलने का कार्य भी करते है।

यज्ञ की अग्नि से वायु गर्म हो जाती है, गर्म वायु होने से वह स्थान खाली हो जाता है फिर रिक्त स्थान पर ठण्डी वायु आनी शुरू हो जाती है। जिस कारण यज्ञीय स्थान पर

वायु परिवर्तन होता है। नये वातावरण का कारण बनता है। वातावरण में आर्द्रता आती है।

वायुमंडल के कुछ सूक्ष्म कीटाणु अधिक गर्मी करने से मरते हैं। कुछ शीतलता से समाप्त होते हैं। जब हम यज्ञ करते हैं तो यज्ञ की उष्मा से उत्पन्न तापक्रम से हमारे सूक्ष्म कीटाणु मरने लगते है। शेष यज्ञ की भस्म को जल में प्रवाहित कर स्नान करते हैं तो शीतलता से नष्ट होने लगते हैं। स्नान के बाद शरीर में स्फूर्ति और आनन्द की अनूभूति होती है। यही यज्ञ की आनन्ददायक क्रिया है।

यज्ञ के लाभ :

(1) पृथ्वी का विषय ही गंध है जिसको हम नाक द्वारा घ्राण शक्ति से जान पाते है। पृथ्वी वायु के गंधों का शोषण करके वायु को निर्गन्ध किया करती है। पृथ्वी पर स्थित सभी प्राणी स्वस्थ वायु को सदा खींचते रहते है। सुगन्ध वायु कुछ मीलों पर चलने के बाद स्वयं बिना गंध की हो जाती है। सुगन्धित वायु भारयुक्त होने के कारण पृथ्वी पर रहती है लेकिन जब वायु गंधहीन हो जाती है तो आकाश की ओर बढ़ती है। अतः यज्ञ की गंधयुक्त वायु पृथ्वी उसका वाष्प व अन्य तेज आदि गुण स्वयं ग्रहण कर निर्गन्ध वायु आकाश की ओर भेज देती है। इसके बदले में पृथ्वी अन्न आदि पदार्थ पुनः उत्पन्न करती है। गंध का प्रभाव बहुत दिनों तक रहता है। यज्ञ के द्वारा उत्पन्न गंध पृथ्वी बहुत दिनों तक ग्रहण करती है।

(2) हवन सामग्री से धुयें के अणु वातावरण में व्याप्त होते है। वायु मण्डल से यह धूम, पोजेटिव चार्ज हो जाते हैं। पोजेटिव चार्ज के धूम अणु वायु मण्डल में नमी को सोख लेते हैं तथा फिर इनके आसपास बादल के खण्ड बन जाते हैं जिनसे वर्षा का कारण बनता है। न्यूटन के सिद्धान्त के अनुसार शक्ति का प्रयोग चाहे किसी द्रव्य या पदार्थ पर किया जाये वह द्रव्य या पदार्थ भी उतने वेग के साथ शक्ति को अपने पूर्व स्थानों को लौटा देता है। इस कारण यज्ञ में खर्च सामग्री का गैसें बनकर पुनः जल बन जाता है। पुनः जल के रूप में विभिन्न पदार्थों में मिलता है।

(3) थोड़ी सी सामग्री को दूर तक बैठे व्यक्ति तक गंध के द्वारा प्रभावित करते हैं जैसे मिर्च जलने पर करती है।

(4) यज्ञ से उत्पन्न कार्बन व इसकी गैसे उतनी ही लाभकारी है जितनी सोडा वाटर में कार्बन डाई आक्साइड एवं होमियोपैथी में कार्बन वैज, ग्रेफाइटस आदि। आयुर्वेद में भस्मों का प्रयोग महंगी चिकित्सा में करते है। भस्म भी जलाने के बाद प्राप्त होती है।

(5) जिस स्थान पर यज्ञ होता है उस स्थान पर रहने वाले व्यक्तियों के नकारात्मक विचार नष्ट हो जाते हैं। अर्थात् अविश्वास समाप्त होकर मन में पूर्णता आती है। कार्य में उत्साह प्राप्त हो धन का आगमन शुरू हो जाता है।

(6) किसी भी पदार्थ का नाश नहीं होता केवल रूप बदल जाता है। हवन सामग्री को अग्नि में जलाने से सामग्री के परमाणु सूक्ष्म हो जाते हैं जो कि वायु मण्डल में फैलकर फेफड़ों तथा शरीर के रोग में पहुँचकर यथास्थान लाभ पहुँचाते हैं।

$E^2=MC^2$

यज्ञ की समिधायें और सामग्री :

चिकित्सा दृष्टि से हर रोग की कुछ न कुछ विशेष हवन सामग्री है लेकिन हवन के द्रव्य हैं उनमें गो धृत के हवन द्वारा बने हुए सुगन्धित वायु मण्डल का आयतन सबसे अधिक है। गो धृत के बाद शक्कर का है। इसके बाद कपूर, गुग्गुल, राल देवदार, चन्दन, अगर, खस, नागरमोथा, पान, सुपारी, नारियल, छुआरा, जटामांसी, गोरोचन, केशर, कस्तूरी, सुगन्धवाला, लौंग, इलाइची, तेजपत्र, कपूर कचरी, मखाना, कमलगट्टा, किसमिस, जौं, चावल, तिल आदि हैं। यज्ञ की अग्नि से जल, जल से पृथ्वी तत्व बनकर अभीष्ट की प्राप्ति होती है। अलग–अलग प्रकार की जड़ी–बूटी के मिश्रण से विभिन्न प्रकार की चिकित्सा की जा सकती है। समिधाओं में आम, गूलर, बेल, पीपल, पाखड़, आम, कदम्ब, तुलसी, ऑवला, आक, शमी, चिचिडा, कुश, खस आदि प्रत्येक व्यक्ति के रोग और क्षमता अनुसार ली जाती है।

यज्ञ की विधि सरल है। यज्ञ एक परामिड आकार के अग्निपात्र में (तॉबे का) अग्नि स्थापन कर उपरोक्त प्रकार की लकड़ी (समिधाओं) से उपरोक्त सामग्री या कुछ सामग्री से गोधृत से यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ का समय सूर्यास्त और सूर्योदय का समय अधिक श्रेष्ठ रहता है। इसका तुरन्त प्रभाव यह होता है कि उडनशील द्रव्य वातावरण में मिलकर सीलन दूर कर रोगों के वायरस को नष्ट कर देते है। एक प्रकार एन्टी वायटिक चिकित्सा भी है।

हवन कुण्ड की रचनायें नाप, तोल, आहुतियों की संख्या और यज्ञ में बैठने वाले व्यक्तियों के अनुसार करनी चाहिए। मनचाहा गड्ढा खोदकर हवन सामग्री की भट्टी जलाते रहना बुद्धिमत्ता नहीं है। जिस प्रकार आग्नेय शस्त्र एक नापतोल से बनाये जाते हैं उसी प्रकार से हवन कुण्ड का भी निर्माण कार्य किया जाता है। परिणाम को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। श्रेष्ठ कर्म का फल श्रेष्ठ अवश्य ही मिलता है। भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ है।

चक्रपाणि हर्बल रिसर्च फाउन्डेशन
श्रीधाम, हुसैनी बाजार
चन्दौसी–202412

मो० 09927311629

विशेष रोगों की विशेष हवन सामिग्री

शीत ज्वर– पटोल पत्र, नागर मौथा, कुटकी, नीम की छाल, गिलोय, कुडे की छाल, करंजा, नीम के पुष्प ।

उष्ण ज्वर– इन्द्र जौ, पटोल पत्र, नीम की गुठली, नेत्र वाला, त्रायमाण, काला जीरा, चौलाई की जड़, बड़ी इलायची ।

खांसी– मुलहटी, पान, हल्दी, अनार, कटेरी, बहेड़ा, उन्नाव अंजीर की छाल ।

रक्त अर्श– हरड़, अमलतास, धृतकुमारी, बेल, मुनक्का, मुलहटी, सनाय, ईशवगोल, ढाक

दस्त– सफेद जीरा, दालचीनी, अजमोद, बेलगिरि, चित्रक, अतीस, सोंठ, चेव्य ।

अपच– तालीस पत्र, तेजपात, पोदीना की जड़, हरड़, अमलताश की छाल, नाग केशर, काला जीरा, सफेद जीरा ।

वमन– वाय विडंग, पीपल, पीपला मूल, ढाक के बीज, निशोथ, नीबू की जड़, आम की गुठली, प्रियंगु ।

अर्श– नाग केशर, हाउ वेर, धमासा, दारू हल्दी, नीम की गुठली का गूदा, मूली के बीज, जावित्री, कमल केशर, गूलर के फल ।

उष्णता की अधिकता– धनियां, कासनी, सोंफ, बनफसा, गुलाब के फूल, आंवला, खस, पोस्त के बीज ।

जिगर या तिल्ली– राई, पीपरा मूल, पुनर्नवा, करेले की जड़, मकोय, सेमर के फूल, जामुन की छाल, अपामार्ग ।

चेचक– मेहंदी की जड़, नीम की छाल, हल्दी, कलोंजी, जावित्री, वांस की लकड़ी, खैर की छाल, श्योनाक ।

जुकाम– दूब, पोस्त, कासनी, अंजीर, सोंफ, उन्नाव, वहेडे की गुठली का गूदा, धनियां ।

प्रमेह– तालमखाना, मूसली सफेद, गोखरू बड़ा, कोंच के बीज, सुपाड़ी, बबूल के बीजों का गूदा, शतावार, इलाचयी छोटी ।

प्रदर– कमल गट्टा, गूलर के फूल, अशोक की छाल, लोध, कमल केशर, माजूफल, सुगन्धवाला, अर्जुन की छाल ।

वात व्याधि– ग्वार पाठे की जड़, रास्ना, बालछड़, सहजन की छाल, मेंथी के बीज, पुनर्नवा, तेज पत्रज ।

मन्दबुद्धि– शतावरि, ब्रह्मी, ब्रह्मादंडी, गोरख मुण्डी, शंख पुष्पी, मडूकपणी, वच, माल कांगनी ।

विष निवारण– वन तुलसी के बीज, अपामार्ग, इन्द्रायण की जड़, करंजा की गिरि, दारूहल्दी, चौलाई के पत्ते, बिनौले की गिरी, लाल चन्दन ।

रक्त–विकार– धमासा, सारवा, कुड़े की छाल, अडूसा, सरफों का, मजीठ, कुटकी, रास्ना ।

चर्म रोग– शीतल चीनी, चोप चीनी, नीम के फूल, चमेली के पत्ते, दारू हल्दी, कपूर, मेंथी के बीज, मझाख ।

मस्तिष्क रोग– बेर की गुठली का गूदा, मौलसिरी की छाल, पीपल की कोंपले, इमली के बीजों का गूदा, काकजंघा, बरगद के फल, खिरैटी, गिलोय ।

बच्चों की अस्वस्थता– अतीस, काकडा सिगी, नागर मौथा, पीपल छोटी, धनियां, धाय के फूल, मुलहटी ।

गर्भ पुष्टि– सोंफ, कासनी, धनियां, गुलाब के फूल, खस, पोस्त के बीज, दाख इन्द्र जौ ।

क्षय– मकोय, जीवन्ती, जटामासी, गिलोय, जावित्री, शालपर्णी, पृष्ट पर्णी, आंवला ।

ऊपर की पंक्तियों में कुछ किस्मों के रोगों की हवन करने योग्य औषधियों के अष्ट वर्ग लिखे हुए हैं । यह सभी प्रायः समान मात्रा में लेनी चाहिए । इनमें से कोई वस्तु न मिले तो दूसरी औषधियाँ अधिक मात्रा में लेकर उसकी पूर्ति की जा सकती है । कोई वस्तु अधिक महंगी हो और उतना खर्च करने की अपनी सामर्थ्य न हो तो उसे कम लेकर उसके स्थान पर दूसरी औषधियाँ बढ़ा देनी चाहिये ।

हवन के अन्त में समीप रखे हुए जल पात्र में कुश, दुर्वा या पुष्प डुबो–डुबो कर गायत्री मन्त्र, मृत्युंजय मंत्र पढ़ते हुए रोगी पर उस जल का मार्जन करें, यज्ञ की भस्म रोगी के मस्तक, हृदय, कण्ठ, पेट, नाभि तथा दोनों भुजाओं से लगावें । धृत पात्र में जो धृत बच जावे उसमें से कुछ बूंद लेकर रोगी के मस्तक तथा हृदय पर लगावें ।

इन सरल प्रयोगों को अनेक बार प्रयोग करके देखा गया है । साधारण औषधि चिकित्सा की अपेक्षा इनका लाभ अधिक ही रहा है । इस पद्धति को अपनाकर चिकित्सक लोग रोगियों को अधिक लाभ पहुँचा सकते हैं और रोगी भी आत्मिक तथा शारीरिक दोनों ही प्रकार के लाभों से लाभान्वित हो सकते हैं ।

मो० 09927311629

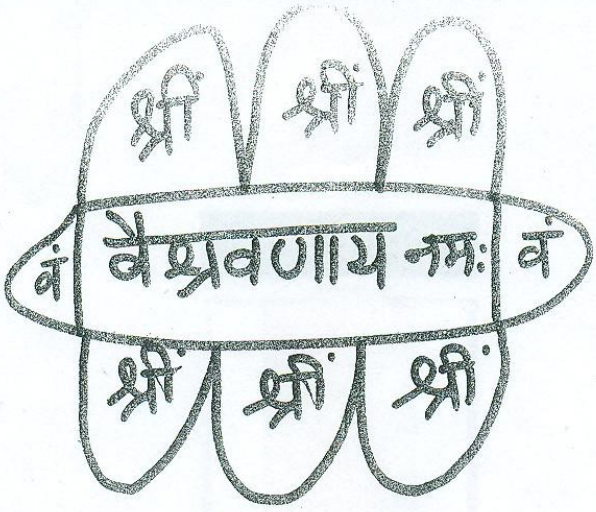

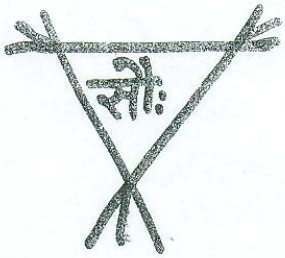

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

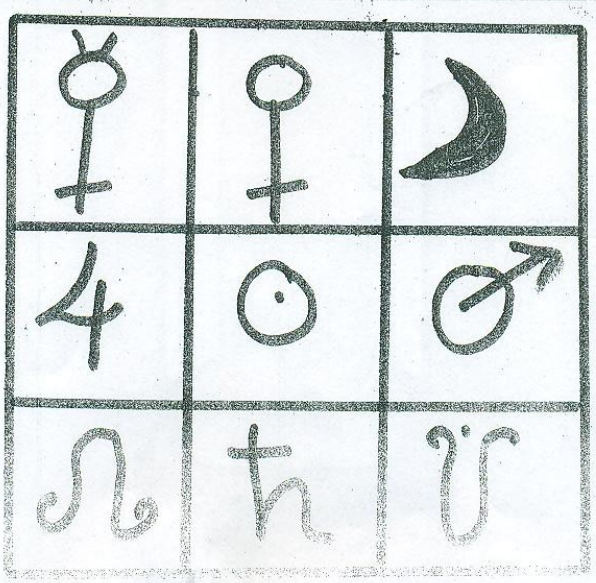

२	२८	८	२०
१६	२२	१०	२०
२६	४	३२	६
२४	१४	१८	१२

४	२६	१६	६०
३२	४४	२०	४०
५२	८	६४	१२
४८	२८	३६	२४

नहीं छपे

१६	१	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

बुध

१	४	११
१०	८	६
५	१२	७
१०	५	१२
११	१	७
६	१३	८
१४	१	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

शुक्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	१
६	१	८
८	५	३
२	१	४
१२	७	१४
१३	११	१
८	१५	१०

चन्द्र

७	२	१
८	६	४
३	१०	५
८	३	१०
१	७	५
४	११	६
१३	८	१५
१४	१२	१०
१	१६	११